DR Krishnadeo kumar bharti.
Assistant professor (G.T)
Dept of Political science
C.M.j College Donwarihat
Khutauna, Madhubani
Email---Kdkbharti08@gmil.com
B.A Part--- 3Date--20-07-2020

राजनीतिक साहित्य के इतिहास में हॉब्स सर्वोच्च व्यक्तिवादी है।इस कथन की विवेचना करें।*(In the History of political Literature Hobbes's is the super Individualism Discuss.)*

व्यक्तिवाद की मूल धारणा यह है कि जितने भी संध, समुदाय अन्य संस्थाएँ या राज्य हैं वे व्यक्तियों द्वारा ही निर्मित है, व्यक्ति ही उनका इकाई है और ये सब अपने मे सम्मिलित व्यक्तियों से अधिक या भिन्न कुछ भी नहीं है।इस दृष्टिकोण से व्यक्ति साध्य है और राज्य साधन मात्र।अतः व्यक्ति की बुराई-भलाई सुख दुख आदि को राज्य और अन्य समुदाय की बुराई भलाई या सुख दुख समझा जाना चाहिए।इस दृष्टि से हॉब्स पूर्ण व्यक्तिवादी है। डनिंग ने इस सम्बन्ध मे लिखा है कि "हॉब्स के सिद्धन्त मे राज्य की शक्ति का उत्कर्ष होते हुए भी उसका मूल आधार पूर्ण रूप से व्यक्तिवादी है।वह सब व्यक्तियों की प्राकृतिक समानता पर उतना ही बल देता है जितना कि मिल्टन या अन्य किसी क्रांतिकारी विचारक ने दिया है।"

हॉब्स की विचारधारा मे व्यक्तिवाद निम्न रूपों में देखा जा सकता है----

*1.*मानव स्वभाव सम्बन्धी धारणा----हॉब्स की मानव स्वभाव सम्बन्धी धारणा व्यक्तिवादी विचारधारा के अनुकूल है समाजवाद या आर्दशवाद के अनुकूल नहीं। हॉब्स अरस्तू के समान व्यक्ति को एक समाजिक प्राणी नहीं मानता वरन् असमाजिक प्राणी कहता है जो आत्मकेंद्रित है और मनोवेगों अहं और लोभ से प्रेरित होता है।हॉब्स की विचारधारा के अन्तर्गत यह व्यक्तिवाद का मनोवैज्ञानिक तत्व है और इसके आधार पर केवल व्यक्तिवादी धारणा की ही रचना हो सकती है।

*2.*राज्य एक कृत्रिम संस्था है-----हॉब्स एक समझौतावादी विचारक है और उसके अनुसार राज्य एक कृत्रिम संस्था है जिसका निर्माण सामाजिक समझौते के आधार पर हुआ है।हॉब्स का व्यक्ति प्राकृतिक अवस्था में पूर्ण स्वतंत्र था और राज्य का निर्माण व्यक्तियों ने कुछ विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया है।इस प्रकार हॉब्स राज्य के प्रति समस्त भावनात्मक का त्याग कर उसे विशुद्ध उपयोगिता के स्तर पर ले जाता है।हॉब्स का यह विचार निरंकुश राज्य के अनुरूप नहीं वरन् व्यक्तिवाद के अनुरूप ही है।इसी कारण तो प्रो.सेवाइन लेवायथन के सम्बन्ध मे लिखते हैं कि "उसके सिद्धन्त स्टुअर्ट राजाओं को जिनका कि वह सर्मथन करना चाहता है।दम्भपूर्ण उक्तियों के कम से कम उतने ही विरुद्ध थे जितने कि उन क्रांतिकारियों के जिनका वह खण्डन करना चाहता था।"

3. राज्य साधन है, व्यक्ति साध्य----राज्य को एक कृत्रिम संस्था और समझौते का परिणाम मानने का तार्किक निष्कर्ष यह है कि राज्य साधन है और साध्य है व्यक्ति। राज्य व्यक्ति के लिए है व्यक्ति राज्य के लिए नहीं और राज्य का अस्तित्व व्यक्ति के जीवन और सम्पति की सुरक्षा के लिए है।वेपर ने लिखा है कि,"राज्य मानव आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विद्यमान है और इसे नैतिक सत्ता शासितों की सहमति से प्राप्त होती है।राज्य व्यक्तियों का लक्ष्य नहीं वरन् व्यक्तिगत राज्य का लक्ष्य है।"

राज्य को राज्य के प्रतिरोध का अधिकार---हॉब्स के अनुसार राज्य की स्थापना व्यक्तियों के द्वारा आत्मरक्षा के लिए की गयीं है।अतः राज्य की आज्ञा का पालन करना व्यक्ति का कर्तव्य है, लेकिन व्यक्ति से राज्य से राज्य की केवल उन्हीं आज्ञाओं के पालन की आशा की जा सकती है।जिनके पालन से व्यक्ति के आत्मरक्षा के अधिकार पर आघात न पहुँचता हो ।हॉब्स लिखता है कि "यदि सम्प्रभु व्यक्ति को अपने आपकी हत्या करने आक्रमणकारी को जख्मी न करने अथवा भोजन, वायु या दवाईयों के सेवन से मना करता है।

इस प्रकार हॉब्स को सामान्यतया निरंकुश राज्य का उग्र सर्मथक ही माना जाता रहा है।किन्तु वास्तव में उसकी विचारधारा मे व्यक्तिगत के तत्व भी प्रबल रूप में उपस्थित है।सेबाइन का तो कहना है कि, हॉब्स के सम्प्रभु की सर्वोच्च शक्ति उसके व्यक्तवाद की आवश्यक पूरक हैं।

आगे, धन्यवाद।

Scanned with CamScanner